Dr. Keerti Kumar
Assistant Prof. - (Guest)
Dept. of Psychology.
S.R.A.P. College, Barachakia, East Champaran
(A Constituent Unit of B.R.A. Bihar University, Muz)
Subject - Psychology
Topic - Regionalism
Class - B.A. Part II paper
Day - Saturday
Date - 11/02/2023
Period - 3rd Period.
Contact no - 9801466117 / 6202215708

---

प्रश्न :- प्रादेशिकता या क्षेत्रवाद के कारण तथा इससे उत्पन्न समस्याओं का वर्णन करें?

उत्तर :- प्रादेशिकता या क्षेत्रवाद भौगोलिक क्षेत्रों के प्रति मनोवृत्ति अभिव्यक्ति या घृणा का नाम है। मैकलुण्डबर्ग (Lundberg) के शब्दों में — क्षेत्रीयता उस अध्ययन से सम्बन्धित है जिसमें कि एक भौगोलिक क्षेत्र तथा मानव व्यवहार के बीच पाये जाने वाले सम्बन्ध पर बल दिया जाता है। इस रूप में क्षेत्रीयता एक प्रकार की विशेष परिस्थिति विज्ञान है। क्योंकि इसकी रूप विभिन्न देशों के मध्य तथा एक ही क्षेत्र के विभिन्न अंगों के मध्य पाये जाने वाले पृथकतात्मक सांस्कृतिक सम्बन्धों से है।

अतः हिंदी बोलने वाले तथा न बोलने वाले क्षेत्रों में संघर्ष के अतिरिक्त अन्य घटनाएँ जैसे आसाम में असमियों तथा बंगालियों में संघर्ष महाराष्ट्र में शिव सेना द्वारा दक्षिण भारतीयों का विरोध, तेलांगना में आन्ध्रों का विरोध, प्रादेशिकता की समस्या की ओर इशारा करता है। भारत में क्षेत्रवाद सदा से रहा है परन्तु आज इसका रूप खतरनाक सिद्ध हो रहा है। आज विभिन्न क्षेत्रों के लोग एक दूसरे को विदेशी समझने लगे हैं प्रत्येक क्षेत्र अपने क्षेत्र के लोगों का पृथक राज्य चाहता है। प्रादेशिकता के आधार पर ही बम्बई राज्य को महाराष्ट्र और गुजरात का प्रान्त हुए।

क्षेत्रवाद के कारण :- इसके प्रमुख निम्नलिखित कारण है

1. ऐतिहासिक कारण :- क्षेत्रवाद और प्रादेशिकता के लिए ऐतिहासिक कारण उत्तरदायी है। स्वतंत्रता के लिए भारत के आजादी के समय से ही पश्चिम तथा उत्तर के कुछ-न-कुछ भेद व्याप्त बना रहा है। उत्तर के अनेक राज्य के राजाओं के शासन को विभाजित किया, शासन के आधार पर ही कभी कोई ऐसा राज्य बना जो उत्तरी भारत तक फैला हो। इससे आज भी लोग पश्चिम भारत के लोग दक्षिण क्षेत्र को उत्तरी भारत से अलग समझते हैं।

2. भौगोलिक कारण :- क्षेत्रवाद का मुख्य कारण भौगोलिक है। अलग-अलग प्रदेशों में रहने वाले लोगों का रहन-सहन, खान-पान, तौर-तरीके, पहनावा, रीति-रिवाज इत्यादि कुछ-न-कुछ अवश्य भिन्न होता है। इससे इनके मन में भेद और घृणा का भाव उत्पन्न होता है।

3. राजनीतिक कारण :- देश में फैले क्षेत्रवाद के मूल में मुख्य कारण राजनीतिक है। भिन्न-भिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में राजनीतिक स्वार्थ को लेकर तथा राजनीतिक सत्ता हासिल करने के उद्देश्य से कुछ लोगों ने क्षेत्रीय राज्य की माँग की है।

4. मनोवैज्ञानिक कारण :- क्षेत्रवाद का विकास और स्थायित्व में मनोवैज्ञानिक कारण का महत्व भी बहुत ज्यादा है। अलग-अलग क्षेत्र के लोग चाहते हैं कि उनका क्षेत्र सबसे आगे रहे।

5. अन्य कारण :- कुछ अन्य कारणों से भी क्षेत्रवाद या प्रादेशिकता को बढ़ावा मिलता है। जैसे सामान्यतः अलग-अलग क्षेत्रों में रहने वाले लोगों में विवाह सम्बन्ध स्थापित नहीं किये जाते। इससे पारस्परिक सम्बन्ध के अवसर कम हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त कुछ आर्थिक कारणों से भी क्षेत्रवाद भावना में वृद्धि होती है।